श्री १००८ श्री वर्तमान चौबीस तीर्थकरों का

पंचकल्याणक—पाठ

प्रकाशक—

स्व० श्रीमानिकचन्द्रजी जैन अग्रवाल

ट्रस्ट वाराणसी।

रचयिता—

श्री टेकचन्द जी

सम्पादक—

श्री मथुरादासजी जैन अग्रवाल

वाराणसी।

प्रथम वृत्ति ११००]

[मूल्य भक्ति

मुद्रक—काशी मुद्रणालय, विश्वेश्वरगंज, वाराणसी।

कृपया इसे फ्रेम में जड़वा कर योग्य स्थान में लगा दें।

❋ अहिंसा परमो धर्मो यतो धर्मस्ततो जयः ❋

आत्मकीर्तन

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री मनोहर जी वर्णी
"श्रीमत्सहजानन्द" महाराज द्वारा विरचित

—:०★०:—

हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम। ज्ञाता द्रष्टा आतम राम ॥टेक॥

(१)

मैं वह हूँ जो हैं भगवान।
जो मैं हूँ वह हैं भगवान॥
अन्तर यही ऊपरी जान।
वे विराग यहँ रागवितान॥

(२)

मम स्वरूप है सिद्ध समान।
अमित-शक्तिसुखज्ञाननिधान॥
किन्तु आशवश खोया ज्ञान।
बना भिखारी निपट अजान॥

(३)

सुख-दुख दाता कोइ न आन।
मोह राग रुष दुख की खान॥
निजको निज परको पर जान।
फिर दुखका नहिं लेश निदान॥

(४)

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम।
विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम॥
राग त्यागि पहुँचूं निजधाम।
आकुलता का फिर क्या काम॥

(५)

होता स्वयं जगत परिणाम।
मैं जगका करता क्या काम॥
दूर हटो परकृत परिणाम।
सहजानन्द रहूँ अभिराम॥

समर्पक :
श्री सकल दि० जैन समाज लालगोला
(श्री सिद्धचक्र बिधान के उपलक्ष्य में समर्पित)

प्रति १२५००
फाल्गुन शु० १५
वी० नि० सं० २४८५

स्व० श्री मानिक चन्द्र जी जैन अग्रवाल
वाराणसी ।

卐 ॥ पूजारंभ ॥ 卐

पणविवि पंच परम गुरु-गुरु-जिन शासनो । सकल सिद्धि दातार सो विघ्नविनाशनो ॥
शारद गुरु अरु गौतम सुमति प्रकाशनो । मंगलकर चउ संघहि पाप प्रणाशनो ॥
पापहि प्रणाशन गुरुहिं गरुआ दोष अष्टादश रह्यो । धरि ध्यान कर्म विनाश केवल ज्ञान अविचल जिन लह्यो ॥
प्रभु पंचकल्याणक विराजत सकल सुर नर ध्यावहीं । त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं ॥

॥ गीता छन्द ॥

चौवीस जिनके पंच मंगल-गर्भ-जन्म अरु तप सही । ज्ञान अरु निर्वाण सबही जीव को पुनकी मही ॥
तिन सेव सुर-हरि खगा ठाने वाँछिका शिवथान के । कर पूज फिर नुत करें बहुविधि कहें स्वरशुभ गान के ॥

॥ चाल-पंच मंगल की ॥

जिनके पंच कल्याण ध्याऊँ । गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान सुभाऊँ ॥
युत निर्वाण पंच शुभदाई । मंगल सेवो सुखदाई ॥
सुखदाय सबको पंच मंगल ध्याइये शिव-कारने । ताकेसु-फल कल्याण पावो कर्म आठो वारने ।
इम जानि भविजन पूज निशदिन महा मंगलदाय हैं । हरि पूज इनको सचीयुत ह्वै एक भव शिव पाय हैं ॥

॥ स्थापना । पद्धड़ी छन्द ॥

यह गर्भ जन्म तप ज्ञान सोय । निर्वाण सहित शुभ पाँच होय ॥
इनकी हरि सुर युत सेव लाय । मैं भी पूजूँ उर हर्ष पाय ॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणेअनन्ताऽनंत ज्ञान शक्तये श्री गर्भजी-श्री जन्म जो-श्री तपजी-श्री ज्ञानजी-श्री निर्वाणजी पंचकल्याणकाय अत्र अत्र-अवतर अवतर संवौषट आह्वाननं, अत्र तिष्ठःतिष्ठःठःठःसंस्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट इति संधिकरणं ॥

नीर निर्मल क्षीर दधि सम कनक झारी में भरूँ । पुनि पूजकर कल्याण पाँचों भ्रमण भव दुखको हरूँ ॥
जे शक्रसब सुर देव युत ह्वै पूजिहैं मन लाय जी । ताहीं फलै अघ जारि निजलै एकभव शिव-पायजी ॥

ॐ ह्री परम ब्रह्मणेअनन्ताऽनन्तज्ञान शक्तये श्री गर्भ श्री जन्म जी श्री तप जी श्री ज्ञानजी श्री निर्वाणजी पंचकल्याणकेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १।

चन्दन सुगन्ध घसाय जल सों पंच मंगल पूजिये । ता फलै भव-आताप जावे अघ हरी सब धूजिये ॥
जे शक्र सब सुर देव युत ह्वै पूजिहैं मन लायजी । ताहीं फलै अघ जारि निजलै एक भव शिव-पायजी ॥

ॐ ह्री परब्रह्मणेअनन्ताऽनन्त ज्ञानशक्तये श्री गर्भजी श्री जन्मजी श्री तपजी श्री ज्ञानजी श्री निर्वाणजी पंचकल्याणकेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

उज्जवल अखंडित शालि तन्दुल लाय हर्ष बढ़ाइये । यों पूजिकर कल्याण पांचों अक्षय पद को पाइये ॥
जे शक्र सब सुर देवयुत ह्वै पूजिहैं मन लाय जी । ताहीं फलै अघ जारि निजलै एक भव शिव पाय जी ॥

ॐ ह्री परम ब्रह्मणे अनन्ताऽनन्त ज्ञान शक्तये श्री गर्भजी श्री जन्मजो श्री तपजो श्री ज्ञानजो श्री निर्वाण जो पंचकल्याण-केभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

पुष्प वरण अनेक गन्धयुत देव-द्रुम के लाइये । पूजि पंच कल्याण फल से मदन का मद ढाइये ॥
जे शक्र सब सुर देव युत ह्वै पूजिहैं मन लाय जी । ताहीं फलै अघ जारि निजलै एक भव शिव पायजी ॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे अनन्ताऽनन्त ज्ञान शक्तये श्री गर्भजी श्री जन्मजी श्री तपजी श्री ज्ञानजी श्री निर्वाण जी पंचकल्याणकेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

नैवेद्य षटरस पूर सुन्दर भक्ति विधि कर लाइये । पूजि पंच कल्याण फल से रोग भूख नसाइये ॥
जे शक्र सब सुर देव युत ह्वै पूजिहैं मन लायजी ।ताहीं फलै अघ जारि निजलै एक भव शिव-पायजी ॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे अनन्ताऽनन्त ज्ञान शक्तये श्री गर्भजी श्री जन्मजी श्री तपजी श्री ज्ञानजी श्री निर्वाणजी पंचकल्याणकेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

मणिमई दीपक हेम पातर लाय सुभग उतारिये । पूजिये कल्याण पाँचों मोह तिमिर विनाशिये ॥
जे शक्र सब सुर देव युत ह्वै पूजिहैं मन लायजी । ताहीं फलै अघ जारि निजलै एक भव शिव-पायजी॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणेअनन्ताऽनन्त ज्ञान शक्तये श्री गर्भजी श्री जन्मजी श्री तपजी श्री ज्ञानजी श्री निर्वाणजी पंचकल्याणकेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

धूप दश विधि गन्ध लेकर अगिन में खेऊँ सही । पूजि पंच कल्याण जिनके कर्म अरि जारूँ मही ॥
जे शक्र सब सुर देव युत ह्वै पूजिहैं मन लायजी ।ताहीं फलै अघ जारि निजलै एक भव शिव-पायजी ॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे अनंताऽनन्त ज्ञान शक्तये श्री गर्भजी श्री जन्मजी श्री तपजी श्री ज्ञानजी श्री निर्वाणजी पंचकल्याणकेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल ले नरेल वदाम खारिक और मनवांछित सही । पूजि पंच कल्याण जिनके पाय हैं, शिव की मही ॥
जे शक्र सब सुर देव युत ह्वै पूजिहैं मन लायजी । ताहीं फलै अघ जारि निजलै एक भव शिव-पायजी ॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणेअनंताऽनंत ज्ञान शक्तये श्री गर्भजी श्री जन्मजी श्री तपजी श्री ज्ञानजी श्री निर्वाणाजी पंचकल्याणकेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज दीप धूप अरु फल सही । ठानि अर्घ कल्याण पाँचों पूजिये सुख की मही ॥
जे शक्र सब सुर देव युत ह्वै पूजिहैं मन लायजी । ताहीं फलै अघ जारि निजलै एक भव शिव पायजी ॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणेअनंताऽनंत ज्ञान शक्तये श्री गर्भजी श्री जन्मजी श्री तपजी श्री ज्ञानजी श्री निर्वाणाजी पंचकल्याणकेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इम पूजि पंच कल्याण हित दा महा मंगलदाय हैं । ताके भजे सुर खग नरा शुभ पूज्य पदवी पाय हैं ॥
जे शक्र सब सुर देव युत ह्वै पूजिहैं मन लायजी । ताहीं फलै अघ जारि निजलै एकभव शिव-पायजी ॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणेअनंताऽनंत ज्ञान शक्तये श्री गर्भजी श्री जन्मजी श्री तपजी श्री ज्ञानजी श्री निर्वाणाजी पंचकल्याणकेभ्यो महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टक सम्पूर्णम्

॥ श्री गर्भ कल्याणक पूजा ॥

दोहा—प्रथम जिन चौवीस के गर्भ कल्याणक सोय। पूजत सुरहरि फल लियो मैं पूजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीर पर्यन्त श्री चौवीस जिन गर्भ कल्याणकाय अत्र वत्र संवौषट आह्वाननं, अत्र तिष्ठःठःठः संस्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट इति संधिकरणं।

मास अषाढ़ द्वैज वदि जान, ऋषभदेव गर्भ ता दिन मान।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव-पार ॥१॥

ओंम् ह्रीं अषाढ़ व० २ श्री ऋषभनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

जेठ बदी मावस हितदाय, तादिन अजित नाथ उर आय।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव-पार ॥२॥

ओंम् ह्रीं जेठ व० १५ श्री अजितनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदी आठैं हरि देह. सम्भव गर्भ दिवस लखि लेव।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव-पार ॥३॥

ॐ ह्रीं फागुन सु० ८ श्री संभवनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि वैसाख छठ दिन जान, अभिनन्दन गर्भ तादिन मान।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥४॥

ॐ ह्रीं वैसाख सु० ६ श्री अभिनंदन नाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सावन सुदि की द्वैज सुजान, सुमति जिनेश गर्भ दिन मान ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार । ॥५॥

ओंम् ह्रीं सावन सुदी २ श्री सुमतिनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ बदी छठ को दिन सोय, पद्म जिनेश गर्भ दिन होय ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥६॥

ओंम् ह्रीं माघ ब० ६ श्री पद्मनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

भादव सुदि छठ सुर सब आय, पूजें गर्भ सुपारस भाय ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥७॥

ओंम् ह्रीं भादों सु० ६ श्री सुपार्स्वनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत बदी पाँचै शुभ होय, चन्द्र जिनेश गर्भ दिन होय ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥८॥

ओंम् ह्रीं चैत ब० ५ श्री चंद्रनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

फागुन वदि नौमी शुभ जान, पुष्पदन्त गर्भया दिन मान ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥९॥

ओम् ह्रीं फागुन ब० ९ मी पुष्पदंत जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत वदी आठैं अघ हरी, शीतल जिन गर्भ सुख की धरी।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥१०॥

ओंम् ह्रीं चैत व० ८ श्री शीतलनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ वदी छठ मंगल भये, श्रीयांस गर्भया दिन लये।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥११॥

ओंम् ह्रीं जेठ व० ६ श्रीयांसनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मास अषाढ़ वदी छठ जोय, वास पूज्य गर्भ या दिन होय।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥१२॥

ओंम् ह्रीं अषाढ़ व० ६ श्री वास पूज्यजी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दसैं जेठ वदि की हितकार, विमल जिनेश गर्भ दिन सार।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥१३॥

ओंम् ह्रीं जेठ वदी १० श्री विमलनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कातिक वदि एकै शुभ जोय, नाथ अनन्त गर्भ दिन होय।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥१४॥

ओंम् ह्रीं कातिक व०१श्री अनंतनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस वदि वैसाख सु आय, धर्म जिनेश गर्भ दिन भाय।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥१५॥

ओंम् ह्रीं वैसाख व० १३ श्री धर्मनाथ जी गर्भ कल्याराकाय अर्घं निर्वपामोति स्वाहा ।

भादव वदि सातें हितवान, शान्ति जिनेश गर्भ दिन जान ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव--पार ॥१६॥

ओंम् ह्रीं भादों व० ७ श्री शांतिनाथ जी गर्भ कल्याराकाय अर्घं निर्वपामोति स्वाहा ।

सावन वदि दशमी हरि आय, कुंथनाथ गर्भ सेव कराय ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥१७॥

ओंम् ह्रीं सावन व० १० श्री कुंथनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामोति स्वाहा ।

फागुन सुदी की तीज अनूप, अरह नाथ गर्भ दिन भूष ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥१८॥

ओंम् ह्रीं फागुन सु० ३ श्री अरहनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत सुदी एकै दिन सोय, मल्लिनाथ गर्भ को दिन होय ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥१९॥

ओंम् ह्रीं चैत सु० १ श्री मल्लिनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सावन वदि की द्वैज सुआय, मुनि सुव्रत गर्भ को दिन थाय ।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥२०॥

ओंम् ह्रीं सावन व० २ श्री मुनि सुव्रतनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वदि असोज द्वैज दिन जान, नमि जिनेश गर्भ दिन मान।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥२१॥

ओंम् ह्रीं कुआर व० २ श्री नमिनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कातिक सुदी छठ मंगल होय, नेम नाथ के गर्भ दिन जोय।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥२२॥

ओंम् ह्रीं कातिक सुदी ६ श्री नेमनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि वैसाख द्वैज दिन लेय, पारस नाथ गर्भ दिन जेय।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥२३॥

ओम् ह्रीं वैसाख व० २ श्री पार्श्वनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि छठ मास असाढ़ सुजान, वर्द्धमान स्वामी गर्भ मान।
ये दिन सबको मंगलकार, सेवो भवि पावो भव पार ॥२४॥

ओम् ह्री अषाढ़ सु० ६ श्री वर्द्धमान जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–इन दिन जिन मंगल भये, सब जीवन हितदाय। सेवै सो मंगल लहैं, इम लखि जजूँ सुभाय॥

ओम् ह्री वृषभादि महावीर पर्यन्त श्री चौबीस जिन गर्भ कल्याणकाय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जयमाल—दोहा ॥

चौवीसो जिन राज के, गर्भ कल्याणक सोय। जा दिन से यहाँ अवतरे, ता दिन मंगल होय॥

॥ चौपाई ॥

गर्भ पहिले षट मास रहावे, तब हरि अवधि ज्ञान से पावे ॥
जिन आगम सुनि भक्ति सुकाजे, धनपति को आज्ञा इम साजै ॥
फिर षट देवी भक्ति को आवें, गर्भ शोधना की विधि लावें ॥
देवी करें मात की सेवा, जा विधि मात खेद नहीं वेवा ॥
ऐसे षट मासन लों भाई, सेवें मात चरन सुख दाई ॥
तब धनपति रचना सब ठाने, ताकी महिमा लखे सो जाने ॥
रतनमयी सब नगर बनावे, वरषा तीन रतन में लावे ॥
ये रचना धनपति सब ठानै, फिर षट मास गये पुनि आनै ॥
मात पाछली रैन मझारी, सपना सोलह ले सुखकारी ॥
हस्ती, सिंह, वृषभ, सुखदाई, लक्ष्मी, पुष्प-माल, युग थाई ॥
देव विमान कलश रवि जानो, सिस युग मीन ताल सुख दानो ॥
सिंहासन सागर विस्तारो, नाग जाति नगरासि अपारो ॥
बिना धूम अगनी सुख दाई, ये सपने लखि मात उठाई ॥
पति से फल सुन के सुख पावें, फिर हरि को सिंह पीठ हलावें ॥
हरि तब अवधि थकी सब जोवे, ले परिवार चलन को होवे ॥
फिर पुर आय मात स्तुति ठाने, अपने सुर पद को फल आनै ॥

पुन्य उपाय आप घर जावे, जै जै शब्द करत मग धावै ॥
इत्यादिक महिमा किम कहिये, बुध थोरी गुण पारन पइये ॥

दोहा—ऐसे जिनके गर्भ की, माल भनै भवि सोय। ता फल कल्याणक लहै, अधिक कहे क्या होय ॥

ओंम् ह्रीं वृषभादि महावीर पर्यंत श्री चौबीस जिन गर्भ कल्याणकाय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति गर्भ कल्याणक पूजा समाप्तम् ।

जन्म कल्याणक पूजा

दोहा—वृषभ आदि जिन देवके, जन्म कल्याणक सोय। मैं पूँजूँ वसु द्रव्य ले, ता फल मंगल होय ॥

ओंम् ह्रीं वृषभादि महावीर पर्यं श्री चौवीस जिन जन्म कल्याणकाय अत्र तत्र अवतर अवतरं संभौषट आह्वाननं, अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः संस्थापनम् अत्रं मम सन्निहितो भव भव वषट संन्निधिकरणं

अड़िल छन्द

चैत मास वदि नौमी हरि वहु देवले, ऋषभनाथ जिन राय जन्मनमि भेवले।
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने, निशदिन मंगल चाह पाप मल टारने ॥१॥

ओंम् ह्रीं चैत व० ९ श्री ऋषभनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ मास की दसें सुदी की जानिये, अजितनाथ जिन देव जन्म दिन मानिये।
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने, निशदिन मंगल चाह पाप मल टारने। ॥२॥

ओम् ह्रीं माघ सुदी १० श्री अजितनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कातिक सुदी पूनम दिन हरिमंगल किये। संभव जन्म निहार अमर भव फल लिये॥
मैं पूजो वसुद्रव्यसहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥३॥

ओम् ह्री कातिक सु० १५ श्री संभव नाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ मास की वारस सुदि सुखदाय हैं। अभिनन्दन को जन्म जान हरि आय हैं॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥४॥

ओम् ह्री माघ सु० १२ श्री अभिनन्दननाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी ग्यारस सब को मंगल करै। सुमति नाथ को जन्म दिवस बुध उच्चरै॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥५॥

ओम् ह्री चैत सु० ११ श्री सुमतिनाथजी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कातिक वदी तेरस को सब सुर आय के। पद्म जन्म दिन सार नये मन भाय के॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥६॥

ओम् ह्रीं कातिक व० १३ श्री पद्मनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ मास सुदी वारस जन्म कह्यो सही। नाथ सु पारस तने देव पूजा ठही॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥७॥

ओम् ह्री जेठ सु० १२ श्री सुपारस नाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र प्रभु का जन्म दिवस सुखकार हैं। पौष बदी ग्यारस भवि को अघ टार हैं॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥८॥

ओम् ह्री पौष व० ११ श्री चन्द्रनाथ जी जन्म कल्याण काय अर्घं निर्वामीति स्वाहा।

मगसर सुदी एकैं दिन बहु मंगल भये। पुष्पदन्त अवतार पूज सुर अघ दहे॥
मै पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥९॥

ओम् ह्री मगसर सु० १ मी पुष्पदन्त जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म माघ वदी वारस दिन हितकार हैं। शीतल जिन अवतार दिवस दिन सार हैं॥
मै पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥१०॥

ओंम् ह्रीं माघ व० १२ श्री शीतलनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदी की ग्यारस हरि सुर लाय के। श्रीयाँस जिन राय जन्म शुभ भाय के॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥११॥

ओम् ह्रीं फागुन व० ११ श्री श्रीयांसनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदी की चौदस अति मंगल भये। वास पूज्य जिन जन्म तास दिन शुभ ठये॥
मै पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥१२॥

ॐ ह्रीं फागुन व० १४ श्री वासपूज्य जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथ माघ सुदी जन्म विमल प्रभु को भयो। तिस दिन सूर नर पूज आप भवफल लयो॥
में पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारणे। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥१३॥

ओंम् ह्रीं माघ सु० ४ श्री विमलनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ मास वदी वारस पुर मंगल भये। अनन्तनाथ अवतार महा सुख कर लये॥
में पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥१४॥

ओंम् ह्रीं जेठ व० १२ श्री अनंतनाथ जी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ महीनो तेरस सुदि सुखकार हैं। धर्म नाथ जिन देव लियो अवतार हैं॥
में पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥१५॥

ओंम् ह्रीं माघ सुदी १३ श्री धर्मनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ मास वदी चौदस घर घर सुख भयो। ताही दिन जिन शान्ति जन्म अपनो लयो॥
में पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥१६॥

ओंम् ह्रीं जेठ व० १४ श्री शांतिनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि एकै वैसाख कुंथ जिन अवतरे। तीन लोक सुर नरा सकल आनन्द भरे॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥१७॥

ॐ ह्रीं वैसाख सु० १ श्री कुंथनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसर सुदि की चौदस हरि हरषाय के। अरह जन्म दिन जानकरी स्तुति भाय के॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥१८॥

ओंम् ह्रीं मगसर सु० १४ श्री अरहनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

मगसर सुदि एकादश मल्लि जन्मे सही। सो शोभा कवि मुख से किम जावे कही॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥१९॥

ओंम् ह्रीं मगसर सु० ११ श्री मल्लिनाथजी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी दसैं वैसाख भविक मन सुख भयो। मुनि सुव्रत जिनराय जन्म ता दिन लयो॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥२०॥

ओंम् ह्रीं वैसाख व० १० श्री मुनि सुव्रतनाथजी जन्म कल्याराकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी दसैं सुधसाढ़ सकल सुखदा भयो। नमि जिनेश जिन जन्म ताहिं दिन ही लियो॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥२१॥

ओंम् ह्रीं अषाढ़ व० १० श्री नमिनाथ जी जन्म कल्याराकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सावन सूदि छठ जन्म नेम जिनको भयो। मानो जग अवतार धर्म ने अब लयो॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥२२॥

ॐ ह्री सावन सु० ६ श्री नेमनाथजी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष मास वदि ग्यारस पारस नाथ जी। जन्म लियो अघ जारन कर भवि साथ जी॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥२३॥

ॐ ह्रीं पौष व० ११ श्री सुपार्श्वनाथ जी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी तेरस सब को हितकार हैं। महावीर जिन जन्म लिये अघ टार हैं॥
मैं पूजों वसु द्रव्य सहित सुख कारने। निश दिन मंगल चाह पाप मल टारने॥२४॥

ॐ ह्री चैत सु० १३ श्री महावीरजी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—वृषभ आदि चौबीस जिन, सब जीवन हितकार।
तिनके दिन शुभ जन्म के, पूजों टेक निवार॥

ॐ ह्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस जिन जन्म कल्याणकाय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा—जन्म होत जिन देव, मंगल होय त्रिलोक में।
सूर नर करिहैं सेव, जा फल निज अघ को हरें॥

॥ जयमाल, चाल पंचमंगल ॥

जिन जनमत सुर आसन हालैं। सब सुर निज निज घर में भालैं।
कल्प देव घर घण्टा बाजैं। भवन देव थल शंख सुगाजै॥
ज्योतिष घर हरि नाँद सुहाई। व्यंतर थान ढोल धुनि थाई॥
थाई सुधुन सुनि देव सबहीं अवधि से सब जानहीं। लखि जन्म जिनको हर्ष अतिउर भक्तियुक्त सुर आवहीं॥
तब सौधर्म इन्द्र हरषायो,। उतर सिंहासन से सिरनायो॥
सकल देव में घोष कराई। जिन जन्मे चालो हरषाई॥
इम सुनि सकल देव हरषाये। निज ऋधयुत तत छिन धाये॥
धाये जो निज परिवार ले सब महा चित हुलसावते।
जै जै सबद मुख सकल भाखें भक्ति जिनकी गावते॥
हरि तब लख योजन गज कीन्हों। ऐरावत नाम सो दीन्हों॥
ता चढ़ि हरि देव मिलाई। सात प्रकार सैन्य बनवाई॥
एक एक सैन्य सात विधि जानो। इन आदिक शोभा अति आनो॥
मानो जो शोभा अधिक सुखदा और क्या मुख गाइये।
चौ जाति के सब देव मिल जिनधाम के पुर आइये॥

जाय सची माता स्तुति कीन्हीं। निद्रा युत जननी को भीन्ही॥
माया जिन तनु धर जिन लीन्हो॥ फिर हरि दिशि गमन सुकीन्हो॥
हरि लख जिन आवत सिर नायो। जिन ले निजकर गज चढ़ि धायो॥

धाये जो जै जै शब्द करते मेरु पाँडुक बन गये।
जल क्षीर दधि सो न्हवन कीन्हों फेरि घर आवत भये॥

जिन-धर मात ढिगै सिर नायो। फिर नृत ताण्डव नाम धरायो।
इम बहु पुन ले हरि घर जावे। देव सेव जिनकी रखवावे॥
प्रभु-बालक क्रीड़ा ठाने। देव सकल सोई विधि आने॥

आने जो जा विधि होय खुश जिन केलि बहुती सों करें।
इम देख लीला बाल जिनकी सुर नरा निज अघ हरें॥

ऐसे जिनके जन्म कल्याणक सुर करें। लेवें पुन फलसार भक्ति मुख उच्चरें॥
ताते भव्य भीऽमहा मन लायके। अर्घ जजों यह दिवस मनुष भव पाय के।

ओम् ह्री वृषवादि महावीर पर्यन्त चौवीस जिन जन्म कल्याणाकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति जन्म कल्याणक पूजा समाप्तम्

श्री तप कल्याणक पूजा

सोरठा–ऋषभ आदि जिनराय। तप दिन तिनके वर नमूँ ॥
सुन धारे अघ जाय। तातें निश दिन ध्याइये।

ओम् ह्री ऋषभादि महावीर पर्यंत श्री चौबीस जिन अवतर अवतर संभौषट आह्वाननं, अत्र तिष्ठः ठः ठः संस्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट इति संन्निधकरणं।

॥ चौपाई ॥

चैत वदी दिन नवमी बखान। ता दिन ऋषभ देव तप जान।
तिस दिन हरि बहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय ॥१॥

ओम् ह्री चैत वदी ९ श्री ऋषभनाथजी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी नौमी हितकार। ता दिन अजित नाथ तप धार।
तिस दिन हरि बहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय ॥२॥

ओम् ह्रीं माघ सुदी ९ श्री अजितनाथ जी श्री तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसर सुदि पूनम अति सेव। सम्भव को तप दिन सुख देव ॥
तिस दिन हरि बहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय ॥३॥

ओम् ह्री मगसर सुदी १५ श्री संभवनाथजी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी वारस भव तार। अभिनन्दन तप को दिन सार।
तिस दिन हरि बहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय ॥४॥

ओम् ह्री माघ सुदी १२ श्री अभिनन्दननाथजी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नौमी सुदि वैसाख मझार। सुमतिनाथ तप दिन हितकार।
तिस दिन हरि बहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय ॥५॥

ओम् ह्री वैसाख सुदी ९ श्री सुमतिनाथजी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कातिक वदि तेरस के दिना। पद्म धार तप निज अघ हना॥
तिसदिन हरि बहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय ॥६॥

ओम् ह्रीं कातिक व० १३ श्री पद्मनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ सुदी वारस भव नाव। धार्‌यो तप सुपार्श्व कर चाव॥
तिसदिन हरि बहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय ॥७॥

ओम् ह्रीं जेठ सु० १२ श्री सुपार्श्वनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस सुख खान। चन्द्र प्रभू तप धार्‌यो जान॥
तिसदिन हरि बहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय ॥८॥

ओम् ह्रीं पौष व० ११ श्री चंद्रप्रभू जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसर सुदि एकै पहिचान। पुष्प दन्त तप को दिन मान॥
तिसदिन हरि वहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥९॥

ओंम् ह्रीं मगसर सु० १ श्री पुष्पदन्त जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी वारस दिन जोय। शीतल तप दिन भवि अव लोय॥
तिसदिन हरि वहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥१०॥

ओंम् ह्रीं माघ व० १२ श्री शीतलनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि ग्यारस सिर ताज। श्रीयाँस तप शिव के काज॥
तिसदिन हरि वहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥११॥

ओंम् ह्रीं फागुन व० ११ श्री श्रेयांसनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि चौदस जिमि पोत। तप ले वास पूज्य अघ खोत॥
तिसदिन वहु हरि देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥१२॥

ओंम् ह्रीं फागुन व० १४ श्री वासपूज्य जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथ माघ सुदि दिन सुखकार। इस दिन विमल नाथ तप धार॥
तिसदिन हरि वहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥१३॥

ओंम् ह्रीं माघ सु० ४ श्री विमलनाथ जो तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ वदी वारस सिरमौर। ता दिन अनन्त नाथ तप घोर॥
तिसदिन हरि वहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥१४॥

ओम् ह्री जेठ व० १२ श्री अनन्तनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

माघ सुदी तेरस गुणवान। धर्मनाथ तप को दिन जान॥
तिसदिन हरि वहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥१५॥

ओम् ह्री माघ सु० १३ श्री धर्मनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ वदी चौदस गुणवान। शान्तनाथ तप दिन चौजान॥
तिसदिन हरि वहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥१६॥

ओम ह्रीं जेठ व० १४ श्री शान्तनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

एकै सुदी वैसाख सुजान। कुंथनाथ तप लें अघ-भान॥
तिसदिन हरि वहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥१७॥

ओम् ह्री वैसाख सुदी १ श्री कुंथनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी दसैं मगसर का मास। अरः तप दिन है अघ नास॥
तिस दिन हरि वहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय॥१८॥

ओम् ह्री मगसर सुदी १० श्री अरःनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसर सुदि ग्यारस शिवकार । मल्लिनाथ तप धार्यो सार ॥
तिसदिन हरि बहु देव मिलाय । पूजत हैं मन वच तन काय ॥१६॥

ओंम् ह्री मगसर सुदी ११ श्री मल्लिनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वदी दसैं वैसाख सुआय । मुनि सुव्रत या दिन तप भाय ॥
तिसदिन हरि बहु देव मिलाय । पूजत हैं मन वच तन काय ॥२०॥

ओंम् ह्री वैसाख वदी १० श्री मुनिसुव्रतनाथजी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वदी दशमी असाढ़ की लियो । नमी नाथ तप या दिन कियो ॥
तिसदिन हरि बहु देव मिलाय । पूजत हैं मन वच तन काय ॥२१॥

ओंम् ह्री असाढ़ वदी १० श्री नमीनाथजी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सावन सुदी छठ नेम कुमार । धारयो तप नाना सुखकार ॥
तिसदिन हरि बहु देव मिलाय । पूजत हैं मन वच तन काय ॥२२॥

ओंम् ह्रीं सावन सु० ६ श्री नेमनाथ जी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष वदी ग्यारस जिन राय । पारस देव धर्यो तप जाय ॥
तिसदिन हरि बहु देव मिलाय । पूजत हैं मन वच तन काय ॥२३॥

ओंम् ह्रीं पौष वदी ११ श्री पार्श्वनाथजी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मगसर वदि की दसैं अनूप। ता दिन महावीर तप रूप ॥
तिसदिन हरि बहु देव मिलाय। पूजत हैं मन वच तन काय ॥२४॥

ओम् ह्रीं मगसर ब० १० श्री महावीरजी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—तपदिन नाम जिनेश के। सव विधि मंगल दाय।
तातैं टेक निवार उर। सेवो मन वच काय ॥
ऋषभ आदि महावीर लों। चौबीसों भगवान ॥
तप दिन पूजों अर्घ सों। जो चाहो शुभ-पान ॥

ओम् ह्रीं वृषभादि महावीर पर्यन्त श्री चौबीस जिन तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-माल

दोहा—लख जग किरिया चपल अति। जिन वैराग्य उपाय।
भावैं उर शुभ भावना। महा मोक्ष फल दाय ॥

जग है अथिर शरण नहिं कोई। राग द्वेष संसार सो होई ॥१॥
जीव अकेला लारन को है। सबहैं भिन्न मिलै नहीं सोहैं ॥२॥
अशुचि महा तन शुचि चिद्आधा। आश्रव योग मिथ्यात कुजापा ॥३॥

संवर परतें रागन आने। निर्जर सों कर्म पूरव भानै ॥४॥
लोक सकल षट द्रव्य को थानो। यामे जीव अनादि भ्रमानो ॥५॥
वोध बिना जिय सुख नहिं पायो। बिना ज्ञान आतम भरमायो ॥६॥
दुर्लभ पर की वाँछा भाई। सो नहिं आप तने वस थाई ॥७॥
आप चेतना ज्ञान सुभावो। सो हैं आप सुलभ ही पावो ॥८॥
तातें सब विधि ए दुख-दाई। तजिये वेग इसी दृढ़ भाई ॥९॥
तबहीं लौकाँन्तिक सुर आये। जिनकी स्तुति कर शीश नवाये ॥१०॥
करि वैराग्य महा दृढ़ देवा। अपने थल जायें कर सेवा ॥११॥
तवहीं हरि सुर सब मिल आवें। बहु जिन तव सिंगार करावें ॥१२॥
फिर जिनकी सिवका धरि देवा। जायें वन करते बहु सेवा ॥१३॥
जिन तहँ सकल परिग्रह छारें। अपने कर निज केश उपारें ॥१४॥
तवहीं जिनको चौथो ज्ञानो। उपजै परम ज्ञान भव भानो ॥१५॥
तव सुर नर खग निज थल जावें। जिन नाना विधि तप वहु भावें ॥१६॥
ऐसे जिनके तप दिन सोई। पूजैं सुर नर अति पुन होई ॥१७॥
ताते सब मिल शीश नवाओ। ता फल अद्भुत महिमा पावो ॥१८॥

दोहा—तप दिन जिन चौबीस के। कहें भक्ति मन लाय॥
सो सब टेक निवार उर। पूजों मन वच काय॥

ओंम् ह्रीं ऋषभादि महावीर पर्यंत श्री चौबीस जिन ~~ग्रभ~~ तप कल्याणकाय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति तप कल्याणक पूजा समाप्तम्॥

श्री ज्ञान कल्याणक पूजा

अड़िल छन्द

ज्ञान कल्याणक जिन चौबीस तने सही। धार हर्ष हरिनवें लेय पुनकी मही॥
तातें मैभी नमूँ महा हित लायजी। मस्तक कर धरि मन वच काय लगाय जी॥

ओंम् ह्रीं ऋषभादि महावीर पर्यंत श्री चौबीस जिन ज्ञान कल्याणकाय अत्र तत्र अवतर अवतर संभौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः संस्थापनम् अत्रं मम सन्निहितो भव भव वषट संन्निधिकरणं।

॥ अड़िल छन्द॥

फागुन वदि ग्यारस भवि को हित कारजी। ऋषभ देव शुध ज्ञान उपायो सारजी॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके॥१॥

ओम् ह्रीं फागुन व० ११ श्री ऋषभनाथ जी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अजित नाथ को ज्ञान भयो केवल सही। पौष सुदी ग्यारस दिन सब मंगल मही ॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥२॥
ओंम् ह्रीं पौष सुदी ११ श्री अजितनाथ जी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि की चौथ सबै मंगल भये। संभव केवल ज्ञान शुद्धता दिन लये।
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥२॥
ओम् ह्री कातिक व० ४ श्री संभव नाथ जी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन अघ नाश ज्ञान केवल लयो। पौष सुदी चौदस दिन तव हितदा भयो।
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥४॥
ओम् ह्रीं पौष सु० १४ श्री अभिनन्दननाथ जी केवल ज्ञान कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी ग्यारस कर्म घाते जिनवरा। सुमति नाथ जिन देव ज्ञान केवल धरा ॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥५॥
ओम् ह्रीं चैत सु० ११ श्री सुमतिनाथ जी केवल ज्ञान प्राप्ताय निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी पूनम दिन पद्म प्रभू सही। पायो केवल ज्ञान भयी मंगल मही ॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥६॥
ओम् ह्रीं चैत सु० १५ श्री पद्मनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि छठ ज्ञान सुपारस जिन लियो। ता दिन तिहुँ जग जीवन को मंगल भयो ॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भाय के ॥ ७ ॥

ओम् ह्रीं फागुन ब० ६ श्री सुपार्श्वनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र प्रभू जिन राज ज्ञान के बल लयो। फागुन वदि सातें दिन सब ही सुख भयो ॥
सो दिन सुर नर भजे भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमो अर्घ शुभ भाय के ॥ ८ ॥

ओम् ह्रीं फागुन ब० ७ श्री चन्द्रप्रभू जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वामीति स्वाहा।

पूष्प दन्त जिन राज ज्ञान के बल लयो। कातिक सुदि दोयज दिन सब मंगल भयो ॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भाय के ॥ ९ ॥

ओम् ह्रीं कातिक सु० २ श्री पुष्पदन्त जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी चौदस दिन सब सुख दाय हैं। शीतल जिन तिस दिन के बल उपजाय हैं ॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमो अर्घ शुभ भायके ॥१०॥

ओंम् ह्रीं पौष ब० १४ श्री शीतलनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी मावस दिन घर घर सुख भयो। श्रीयांस जिन राय ज्ञान तिस दिन लयो ॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥११॥

ओम् ह्रीं माघ ब० १५ श्री यांसनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वैज माघ सुदि ज्ञान शुद्ध के वल भयो। वास पूज्य जिन राज लोक थुति पद लयो॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥१२॥

ओंम् ह्रीं माघ सु० २ श्री वास पूज्य जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी छठ दिवस सबै हितकार हैं। विमल नाथ के वल उपजायो सार हैं॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भाय के ॥१३॥

ओंम् ह्रीं माघ सुदी ६ श्री विमलनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी मावस त्रिभुवन जै जै भयो। अनन्त नाथ जिन ज्ञान पंचमों तब लयो॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमो अर्घ शुभ भाय के ॥१४॥

ओंम् ह्रीं चैत व० १५ श्री अनंतनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष सुदी पूनम के बल उपज्यो सही। धर्म नाथ हितकार पदी जिनकी लही॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भाय के॥१५॥

ओंम् ह्रीं पौष सु० १५ श्री धर्मनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष दसैं सुदि शान्त नाथ केवल लयो। लोकालोक पदारथ को ज्ञानन लयो॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥१६॥

ओंम् ह्रीं पौष सु० १० श्री शान्तनाथ जी केवल ज्ञान कल्याराकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीज चैत सुदि सकल जीव हितकार हैं। कुंथ नाथ केवल उपजायो सार हैं॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥१७॥

ओम् ह्रीं चैत सु० ३ श्री कुंथनाथजी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कातिक सुदि बारस दिन अरह जिनंदजी। केवल सुध उपजाय भये निरफंदजी॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥१८॥

ओम् ह्रीं कातिक सु० १२ श्री अरहनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी की द्वैज भाव सों ज्ञान ले। मल्लिनाथ केवल युत पर मैं नाभि लै॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥१९॥

ओंम् ह्रीं पौष ब० २ श्री मल्लिनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

नौमी वदि वैसाख जगत हितकार जो। मुनि सुव्रत ले ज्ञान भये भव-पार जी॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥२०॥

ओम् ह्रीं वैसाख ब० ९ श्री मुनि सुव्रतनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसर सुदि ग्यारस दिन हितकारी भयो। नमीनाथ जिन ज्ञान शुद्ध केवल लयो॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके ॥२१॥

ओंम् ह्रीं मगसर सु० ११ श्री नमिनाथ जी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

सुदि एकै आसोज नेम जिन सिध भये। पायो केवल ज्ञान लोक मंगल ठये॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके॥२२॥

ओम् ह्रीं असोज सु० १ श्री नेमनाथ जी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी दिन चौथ को पार्श्वनाथ जी। पायो केवल ज्ञान नमों सिर हाथ जी॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लाय के। इम लखि मवि सब नमों अर्घ शुभ भायके॥२३॥

ओम् ह्रीं चैत व० ४ श्री पार्श्वनाथ जी केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी दसैं वैसाख पाप सब छाड़ियाँ। वर्द्ध मान जिनराय ज्ञान शुभ माँड़ियाँ॥
सो दिन सुर नर भजें भक्ति मन लायके। इम लखि भवि सब नमों अर्घ शुभ भायके॥२४॥

ओम् ह्रीं वैसाख सु० १० श्री वर्द्धमान जी ज्ञान कल्याराकाय अर्घं निर्वपामोति स्वाहा।

दोहा—ऋषभ आदि चौवीस जिन। इन दिन केवल पाय॥
तातें वसु द्रव्य लायके। पूजों अर्घ चढ़ाय।

ओम् ह्रीं ऋषभादि महावीर पर्यन्त श्री चौवीस जिन केवल ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जय माल—गीता छन्द॥

तप करत जिन नृप मोह जीत्यो, फेरि समअसि कर लई।
धरि ध्यान घाती घात दुखदा, ज्ञान केवल ऋधि ठई॥

तब लोक त्रिय सब आय झल के, महा सुख उत्पति भयो।
इम जानि सब हरि अवधि सेती, हाथ धर सिर को नयो॥

॥ पारना छन्द ॥

इम लखि हरि धनज बुलायो। फिर इम मुख ते फरमायो॥
जिन समव शरण विधि ठाने। पुनि आप चले उमगानो॥
जब धनपति शीश नवायो। हरि को वच शीश चढ़ायो॥
फिर समव शरण विधि ठानो। ताको सुनि अल्प बखानो॥
नभ में त्वंग भूमि बनावे। चौदस तहँ सीढ़ी पावे॥
भू नील रतन की जानो। तापर चौकोट बखानो॥
एक रतन पंचमय जानो। सो धूलि साल परमानो॥
दूजा कंचन सम पीरो। ताए हिम सम त्रय धीरो॥
चौथो हैरजत स्वरुपा। ऐसे चौ साल अनूपा॥
फिर पाँच वेदिका जानो। सब कनक मयी विच थानो॥
तहँ खाई फिर शुभ वारी। वन पंकति महल अपारी॥
फिर धुजा तने जुथ भाई। चौदश नित शाल बनाई॥

फिर मानथंभ चौ होई। ता देखे मानन कोई॥
चौदस वापी जल थानो। तहँ धूप घटा अति मानो॥
तहँ रत्न धूप सुख दाई। ता देखे भव सुमिराई॥
सबको मध्य है शुभ थानो। तहाँ द्वादश सभा बखानो॥
ता मधवेदी अति सोहै। मणिमय कटनीमन मोहै॥
तहँ सिंह पीठ सुखदाई। ताकेमध कमल सुहाई॥
तापै चौ अंगुल जानो। अंत रीक्ष रहे भगवानो॥
ध्वनि दिव्य खिरै सुखदाई। ता सुनि भवि शिव सुखपाई॥
इम जिनवर करै विहारो। इत्यादिक कथन अपारो॥
मुख तें कहा कौलोंकहिये। आगम से सब लख लहिये।

॥ वेसरी छन्द ॥

ऐसे जिन केवल विधि होई। पूजो भवि मन वचनन सोई॥
ताके फल की कहँ लोंकहिये। जो पद पूजे सोफल लहिये॥

ओम् ह्रीं ऋषभादि महावीर पर्यन्त श्री चौबीस जिन केवल ज्ञान कल्याणकाय महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति ज्ञान कल्याणक पूजा समाप्तम्

॥ श्री मोक्ष कल्याणक पूजा ॥

दोहा—ऋषभ आदि महावीर लों। गये मुक्ति अघ जारि॥
सो दिन द्रव्य मिलाय वसु। पूजो मन वच धारि॥

ओम् ह्रीं ऋषभादि महावीर पर्यंत श्री चौवीस जिनेन्द्रेभ्यो अत्र वत्र अवतर अवतर संभौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठः ठः ठः संस्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट इति सन्धिकरणं।

॥ वेसरी छन्द ॥

ऋषभ देव चौदश शिव पाई। माघ महीनो वदि सुखदाई॥
ता दिन सुर सव मिलआये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥१॥

ओम् ह्रीं माघ व० १४ श्री ऋषभनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अजित नाथ स्वामी अघ जारें। चैत सुदी पाँचे शिव धारैं॥
ता दिन सुर नर सव मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥२॥

ओम् ह्रीं चैत सुदी ५ श्री अजितनाथजी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी छट दिन हितकारी। संभवनाथ वरी शिव नारी॥
ता दिन सुर नर सव मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥३॥

ओम् ह्रीं चैत वदी ६ श्री संभवनाथजी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि वैसाख छठ सुखदाई। अभिनन्दन जिनने शिव पाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥४॥

ओम् ह्रीं वैसाख सुदी ६ श्री अभिनंदनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी ग्यारस सुखदाई। सुमति नाथ जिनने शिव पाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥५॥

ओम् ह्रीं चैत सुदी ११ श्री सुमतिनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि की चौथ पियारी। पद्मनाथ पाई शिव नारी॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥६॥

ओम् ह्रीं फागुन व० ४ श्री पद्मनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सप्तमी अनूपा। नाथ सुपार्श्व भये शिव भूपा॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥७॥

ओम् ह्रीं फागुन व० ७ श्री सुपार्श्वनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सातें सुख दानी। चन्द्र जिनेश भये शिव थानी॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥८॥

ओम् ह्रीं फागुन व० ७ श्री चंद्रनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भादव सुदि आठैं हितदाई। पूष्पदन्त जिनने शिव पाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥९॥

ओंम् ह्रीं भादों सु० ८ श्री पुष्पदन्त जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि आठैं असोज सुखदाई। शीतल नाथ मोक्ष जिन पाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥१०॥

ओंम् ह्रीं असोज सु० ८ श्री शीतलनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सावन सुदि पूनम सिर नाये। श्रीयांस जिन सिद्ध कहाये॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥११॥

ओंम् ह्रीं सावन सु० १५ श्री यांसनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भादव सुदि चौदस सुखदाई। वास पूज्य जिनने शिव पाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥१२॥

ओंम् ह्री भादव सुदी १४ श्री वासपूज्य जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि असाढ़ आठैं हितकारी। विमल जिनेशवरी शिव नारी॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥१३॥

ओंम् ह्री असाढ़ वदी ८ श्री विमलनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी मावस शिव पाई। अनन्त नाथ जिन वर ने भाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥१४॥

ओम् ह्रीं चैत वदी १५ श्री अनन्तनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथ जेठ सुदि की शुभ जानो। धर्मनाथ पायो शिव थानो॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥१५॥

ओम् ह्री जेठ सुदी ४ श्री धर्मनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ वदी चौदस शिव पाई। शान्तिनाथ जिन वर ने भाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥१६॥

ओम् ह्रीं जेठ व० १४ श्री शान्तिनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि एकै वैसाख सुभाई। कुंथनाथ प्रभु ने शिव पाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥१७॥

ओम् ह्रीं वैसाख सुदी १ श्री कुंथनाथजी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी मावस सुध भाई। अरः जिन वर शिव कामिनी पाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥१८॥

ओम् ह्रीं चैत व० १५ श्री अरहनाथजी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदि पाँचे शिव होई। मल्लिनाथ पंचम गति जोई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सत कर निज थान सिधाये॥१६॥

ओम् ह्री फागुन सु० ५ श्री मल्लिनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि बारस सिद्ध थाये। मुनि सुव्रत जगनाथ कहाये॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥२०॥

ओम् ह्रीं फागुन ब० १२ श्री मुनिसुव्रतनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदस वदि वैसाख सुभाई। नमीनाथ जिन वर शिव पाई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥२१॥

ओम् ह्री वैसाख ब० १४ श्री नमीनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

सातें सुदि असाढ़ की जानो। नेमनाथ तादिन शिव थानो॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥२२॥

ओम् ह्रीं अषाढ़ सु० ७ श्री नेमनाथ जी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सावन सुदि सातें शिव पाई। पारस देव भये जगराई॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥२३॥

ओम् ह्रीं सवान सु० ७ श्री पार्श्वनाथजो मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कातिक वदि मावस हितकारी। महावीर पाई शिव नारी॥
ता दिन सुर नर सब मिल आये। उत्सव कर निज थान सिधाये॥२४॥

ओम् ह्री कातिक वदी १५ श्री महावीरजी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—ऋषभ आदि महावीर जिन। गये मुक्ति दिन सोय॥
सो भवि पूजों भावसों। नित प्रति मंगल होय॥

ओम् ह्रीं वृषभादि महावीर पर्यन्त श्री चौबीस जिन मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-माल

दोहा—ऋषभ आदि महावीर जिन। गये मोक्ष अघ जारि॥
तिनके पद मिल भविक सब। पूजों वसु मद टारि॥

घाति अघाति शिव गये। लोक शिखर थिर थायेजी। वात वलय तन वेढ़ियो।
भव आनन जान मिटायेजी। ते सिद्ध पूजों भावसों॥१॥

आतम तो शिव थल गये। तव भये हैं निरंजन देवा जी। तन परमाणू खिर गये।
नख केश रहे स्वय मेवाजी। ते सिद्ध पूजों भावसों॥२॥

अजर अमर सास्वत सुखी। फिर भव दुख सकल न सायेजी। तव हरि सुर लखि ज्ञान में।
ले निज ऐन सिधायेजी। ते सिद्ध पूजों भावसों॥३॥

बहु विधि भक्ति प्रभावतें। पूजा करि पुन्य उपायेजी। फिर निज तन नख कच लहैं।
जिनको तन फेर रचावेजी। ते सिद्ध पूजों भावसों ॥४॥
ताकी फिर किरिया करें। अरु भस्मी शीश लगावेजी। जै जै मुख ते वच कहैं।
सुर के भव के फल पावेंजी। ते सिद्ध पूजों भावसों ॥५॥
अवभी जोभवि गायगें। मन वच काय लगायेजी। यह निर्वाण कल्याण की।
सो निर्वाण सुथायेजी। ते सिद्ध पूजों भावसों ॥६॥
जो सिद्ध ध्यावे, सोफल पावे। सुर नर के सुख भाई ॥
फेर अनुक्रम से शिव जावें। और कहाँ अधिकाई ॥

ओम् ह्रीं ऋषभादि महावीर पर्यन्त श्री चौवीस जिन मोक्ष ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ मोक्ष कल्याणक पूजा समाप्तम् ॥

॥ समुच्चय जयमाल ॥

दोहा—ऋषभ आदि महावीर के। पंच कल्याणक सार ॥
सेवत सुर नर नारि युत। पावत हैं भव पार ॥

पंच कल्याण ऋषभ जिन केरा। पूजैं मिटै जगत का फेरा ॥१॥
अजित नाथ के पंच कल्याणा। पूजों भवि होवे अघ हाना ॥२॥
संभव तनय कल्याणक पाँचो। तिस दिन पूज महा पुन साँचो ॥३॥
अभिनन्दन के पंच उछावा। पूजों हो भवि है भल दावा ॥४॥
सुमति नाथ के मंगल भाई। पूजैं देव सहित हरि आई ॥५॥
पंच कल्याण पद्म जिनकेरा। पूजैं मिटै जगत का फेरा ॥६॥
देव सुपारस के सुन भाई। पंच कल्याण नमो सुखदाई ॥७॥
चन्द्र प्रभु के पंच उछावा। पूजै मिटै कर्म का दावा ॥८॥
पंच कल्याण पुष्प जिन पाये। जिन पूजे तेही सुध थाये ॥९॥
शीतल जिनके पंच कल्यानो। ध्याऊँ निश दिन अति पुन साँचो ॥१०॥
श्रीयांस जिन मंगल पाये। पाँचो पूजे ते धन थाये ॥११॥
पाँच उछाह भये सुखदाई। वासपूज्य जिन वर के भाई ॥१२॥
विमल पंच शुभ मंगल पाये। तिन सुख लियो जिनो कंठ गाये ॥१३॥
पंच कल्याण अनन्त जिन होई। ताकी महिमा भाषै न कोई ॥१४॥
धर्मनाथ पंच मंगल लीन्हे। पूजै तिन शुभ कारज कीन्हे ॥१५॥

शान्ति नाथ के पंच उछावा। पूजों भवि उर कर उच्छावा ॥१६॥
कुंथ जिनेश कल्याणक पाँचो। पूजें निशदिन अति पुन साँचो ॥१७॥
अरह नाथ पाँच शुभ पाये। कल्याणक हरि पूजन आये ॥१८॥
मल्लिकल्यान पाँच सो जानो। पूजै होय पाप को हानो ॥१९॥
मुनिसुव्रत जी पाँच तें पाये। कल्याणक सब के मन भाये ॥२०॥
नमीनाथ के उत्सव प्यारे। पूजै हरि सुर भिन भिन सारे ॥२१॥
नेमनाथ कल्याणक सोई। पूजें ते अद्भुत फल होई ॥२२॥
पारस पाँच कल्याणक पाये। निशदिन सब जन ने सुखपाये ॥२३॥
वर्द्धमान के पंच उछावा। पूजो हो भवि कर उर चावा ॥२४॥

॥ सोरठा ॥

ऋशभ जिनेश्वर आदि, चौवीसों भगवान के। कल्याणक दुखवादि, पूजो भवि वसु द्रव्य तें ॥

॥ दोहा ॥

चौवीसों जिन देव के, कल्याणक हितदाय। पूजै सो मंगल लहै, पर भव शिव-सुखपाय ॥

ओंम् ह्रीं ऋषभादि महावीर पर्यंत श्री चौवीस जिन मोक्ष कल्याणकाय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिषेक पाठ

श्री मज्जिनेन्द्र मभिवंद्य जग त्रयेशं। स्वादाद नायक मनन्त चतुष्ठ यार्हम् ॥ श्री मूल संघसुदृशां सुकृतैक हेतू। जैनेन्द्र यज्ञ विधि रेश मयाभ्यदाई ॥१॥ ओंम् ह्रीं पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मन्मन्दिर सुन्दरे शुचि जलै धौंते सदर्भाक्षतै। पीठे मुक्ति वरं निधाय रचितं त्वत्पाद पद्म स्रजः। इन्द्रोहं निज भूषणार्थक मिदं यज्ञोपवीतं दधे। मुद्रा कंकण शेष रान्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥२॥

ओंम् ह्रीं (जनेऊ पहिरकर ६ तिलक लगाना)

ये सन्ति के चिदह दिव्य कुल प्रसूता नागाः प्रभृत वल दर्प युता विवोधा। संरक्षणार्थक। ममृतेन शुभेन तेषां प्रक्षालयामि पुरत स्नपनस्य। भूमिम् ॥३॥ ओंम् ह्रीं भूमि शोधनम्

क्षीरार्ण वस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः प्रक्षालितं सुर वरैर्यद नेक वारम्। अत्युद्य मुद्यत महं जिन पाद पीठं। प्रक्षाल यामि भव संभव ताप हारि ॥४॥ ओम् ह्रीं (सिंहासन प्रक्षालनम्)

श्री शारदा सुमुख निर्गत वीज वर्णं। श्री मंगलीक वर सर्व जनस्य नित्यं। श्री मत्स्वयं क्षयति तस्य विनाश विघ्नं। श्री कार वर्ण लिखितं जिन भद्र पीठे॥५॥ ओम् ह्रीं (श्रीकार वर्ण लिखना)

इन्द्राग्नि दंड धर नैऋत पाश पाणि। वायुत्तरेश शशि मौलि फणीन्द्र चन्द्रा।

आगत्य यूय मिह सानुचराः स चिन्हाः । स्वं स्वं प्रतीच्छत वलिं जिन पाभिषेके ॥६॥

ओंम् ह्रीं इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत, वरुण, पवन, कुबेर, ऐसान, धरणीन्द्र, सोम, आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकै चरुसुदीप सुधूप फलार्घ कै । धवल मंगल गानरवाकुलैजिनगृहे जिन नाथमहंयजे ॥७॥ ओम् ह्रीं अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ।

भो क्षेत्रपाल जिन प्राप्त ममांक भाल । द्रष्टा कराल जिन शासन वैर काल ।तैलाहि जन्म गुरु चन्दन पुष्प दीपैः । भोग प्रतीच्छ जगदीश्वर जगत कालैः ॥८॥ ओंम् ह्रीं श्री क्षेत्रपाल जी के पूजन को अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दध्युज्ज्वलाक्षत मनोहर पुष्प दीपैः । पात्रार्पितं प्रति दिनं महता दरेण। त्रैलोक्य मंगल सुखानल काम दाह । मारार्तिकं तव विभोरव तार यामि ॥९॥ ओंम् ह्रीं (मंगल आरती करणं)

यं पाँडुका मल शिला गत मादि देव । मस्ना पयं सुर वराः सुर शैल मूर्ध्निं ॥ कल्याणमीप्सु रह मक्षत तोय पुष्पै । संभाव यामि पुर एव त्वदीय विम्बम् ॥१०॥ ओंम् ह्रीं (जिनविंव विराज मान करना)

उदक चन्दन तन्दुलपुष्पकै चरु सुदीप सुधूपफलार्घकै ।धवल मंगल गानर वाकुलैजिनगृहे जिननाथमहंयजे ।११।

ओंम् ह्रीं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सत्यल्ल वार्चित मुखान्कल धौत रुप्य । ताम्रार कूट घटिता पयसां सु पुर्णान् ।संवाह्यता मिवगताश्चतुरः समुद्रान । संस्था पयामि कलशान जिनवेदि कांते ॥१२॥ ओंम् ह्रीं (कलश स्थापनं करोमि ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकै चरु सुदीप सुधूप फलार्घकै । धवल मंगल गानर वाकुलै जिनगृहे जिननाथ महंयजे ॥१३॥ ओंम् ह्रीं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दूरा वनम्र सुरनाथ किरोट कोटिः । संलग्न रत्न किरणच्छ विधू सराघ्रिं । प्रस्वेद ताप मल मुक्त मपि प्रकृष्टैः । भक्त्या जलैर्जिन पतिं वहुधा भिषिंचै ॥१४॥ ओंम् ह्रीं जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्कृष्ट वर्ण नव हेम रसा भिराम । देह प्रभाव लय संगम लुप्त दीप्तिम् । धारा घृतस्य शुभगंध गुणानु मेयां । वंदेऽर्हतां सुरभि संस्न पनोपि युक्ताम् ॥१५॥ ओंम् ह्रीं (घृत निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्पूर्ण शारद शशांक मरीचि जाल । स्यंदै रिवात्म यश सामिव सुप्रवाहैः । क्षीरैर्जिना शुचि तरैरभिषिंच्य माना । सम्पादयन्तु मम चित्त समी हितानी ॥१६॥ ओंम् ह्रीं दुग्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुग्धाब्धि वीचि पयसंचित फेन राशि । पाँडुत्व कान्ति मव धारयता मतीव । दग्धां गतां जिन पदे प्रतिमां सुधारा । संवद्यता सपदि वांछित सिद्ध एव ॥१७॥ ओंम् ह्रीं दधि निर्वपामीति स्वाहा ।

भक्त्या ललाट तट देश निवेशि तोच्चै । हस्तैरच्युता सुरवरा सुर मर्त्य नाथैः । तत्काल पीलित महेक्षु रसस्य धारा । सद्यः पुनातु जिन विम्ब गतै च युष्मान ॥१८॥ ओंम् ह्रीं इक्षुरस धारा निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकै चरु सुदीप सुधूप फलार्घकै ।धवल मंगल गानरवाकुलै जिन गृहे जिननाथ महंयजे ॥१९॥ ओंम् ह्रीं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सस्ना पितस्य घृत दुग्धदधीक्षु वाहै । सर्वाभिरौषधि भिरर्हत उज्ज्वला भिः । उद्वर्ति तस्य विदधाम्यभिषेक

मेला । कालेय कुंकुम रसोत्कट वारि पूरैः ॥२०॥ ओंम् ह्रीं सेवौषधि धारा निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकै चरु सुदीप सुधूप फलार्घकै । धवल मंगल गानरवाकुलै जिन गृहे जिननाथ महंयजे॥२१॥ ओंम् ह्रीं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्रव्यैरनल्प घन सार चतुः समाद्यै । रामोद वासित समस्त दिगंत रालैः । मिस्री कृतेन पय सां जिन पुंगवानां । त्रैलोक्य पावन महं स्नपनं करोमि ॥२२॥ ओंम् ह्रीं गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

इष्टै मनोरथ शतैरिव भव्य पुंसा । पूर्णैः सुवर्ण कलशैर्निखिलैर्वसानैः । संसार सागर विलंघन हेत सेतुः । माप्ता वये त्रिभुनैक पतिं जिनेन्द्र ॥२३॥ ओंम् ह्रीं पूर्णाकलशधारा जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैचरु सुदीप सुधूप फलार्घकै । धवल मंगल गानरवाकुलै जिनगृहे जिननाथ महंयजे ॥२४॥ ओंम् ह्रीं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीपार्श्वनाथ जिनपूजा ।

गीताछंद०–धर स्वर्गप्राणतकों विहाय, सुमात वामा सुत भये । अश्वसेनके पारस जिनेश्वर, चरन जिनके सुर नये ॥ नवहाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं । थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो, करम मेरे सब नसैं ॥१॥

ओंम ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् । ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

अथाष्टक-छंद नाराच ।

क्षीरसोमके समान अंबुसार लाइये। हेमपात्र धारिकैं सु आपको चढ़ाइये। पार्श्वनाथदेव सेव आपकी करूं सदा। दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये। आप चर्न चर्च मोहतापको हनीजियें पार्श्व०॥२॥

ओं ह्रीं श्रीपशर्वनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

फेन चन्दके समान अक्षतान् लाइकैं, चर्नके समीप सार पुंजको रचाइकैं ॥ पार्श्वनाथदेव०॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

केवडा गुलाब और केतकी चुनायकैं, धार चर्नके समीप कामको नसाइकैं ॥ पार्श्वनाथ०।३।

ओंम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने, आप चर्न चर्चते क्षुधादिरोगको हनै ॥ पार्श्वनाथ० ॥

ओं ह्रीं-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाय रत्नदीपको सनेहपूरके भरूं, वातिका कपूर वारि मोह ध्वांतकुं हरूं ॥ पार्श्वनाथ० ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपगंध लेयकैं सुअग्निसंग जारिये, तास धूप के सुसंग अष्टकर्म वारिये। पार्श्वनाथ० ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खारिकादि चिंरभटादि रत्नथालमैं भरूं, हर्ष धारिकैं जजूं सुमोक्ष सुक्खको वरूं ॥ पार्श्व०॥८॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वहा ।

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये, दीप धूप श्रीफलादि अघतैं जजीजिये ॥ पार्श्व०॥९॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पञ्च कल्याणक । छंदचाल ।

शुभप्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये । वैशाखतनी दुतिकारी, हम पूजैं विघ्न निवारी ॥

ओं ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयायां गर्भ मंगल मंडिताय श्री पार्श्व जितेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता। श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै।२॥

ओं ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां जन्म मंगलप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जितेंद्राय अर्घं विर्वपामीति स्वाहा ।

कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावन भाई। अपने कर लोंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना ॥३॥

ओं ह्रीं पौष कृष्णाकादश्यां तपो मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जितेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई। तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवनको सुख दीना ॥४॥

ओं ह्रीं चैत्र कृष्णै चतुर्थी दिने केवल ज्ञान प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जितेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई । सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना ॥५॥

ओं ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जितेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला । छंद ।

पारसनाथ जिनेन्द्रतने वच, पौनभखी चरतें सुन पाये। करयो सरधान लहयो पद आन भयो पद्मावति शेष कहाये ॥ नाम प्रताप टरै संताप सु, भव्यनको शिवशरम दिखाये । हैं विश्वसेनके नंद भले, गुणगावत हैं तुमरे हरषाये ॥१॥

दोहा–केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ। लच्छण उरग निहारपग, वंदौं पारसनाथ॥

पद्धरी छंद

रची नगरी छहमास अगार। बने चहुँ गोपुर शोभ अपार॥ सु कोटतनी रचना छवि देत। कँगूरनपै लहकें बहुकेत॥ ३॥ बनारसकी रचना जु अपार। करी बहुभांति धनेश तयार। तहाँ विश्वसेन नरेन्द्र उदार। करै सुख वाम सु दे पटनार॥ ४॥ तज्यो तुम प्रानत नाम विमान भये तिनके वर नंदन आन। तबै सुरइंद नियोगन आय। गिरिंद करी विधि न्हौन सु जाय॥५॥ पिता-घर सौंपि गये निज धाम। कुवेर करै वसु जाम सु काम॥ बढ़ै जिन दौज मयंक समान। रमैं बहु बालक निर्जर आन॥६॥ भये जब अष्टम वर्ष कुमार। धरे अणुव्रत्त महासुखकार॥ पिता जब आनकरी अरदास। करौ तुम व्याह वरै मम आस॥७॥ करी तब नाहिं रहे जगचन्द। किये तुम काम कषाय जु मंद। चढ़े गजराज कुमारन संग। सु देखत गंगतनी सुतरंग॥८॥ लख्यो इक रंक करै तप घोर। चहुँ-दिशि अगनि बलै अति जोर। कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात। करै बहु जीवनकी मत घात॥९॥ भयो तब कोप कहै कित जीव। जले तब नाग दिखाय सजीव। लख्यो यह कारण भावन भाय। नये दिव ब्रह्मरिषीसुर

आय ॥१०॥ तबहि सुर चार प्रकार नियोग। धरी शिविका निज कंध मनोग। कियो वनमाहि निवास जिनंद। धरे व्रत चारित आनन्द कंद ॥११॥ गहे तहँ अष्टमके उपवास। गये धनदत्त तने जु अवास। दयो पयदान महासुखकार। भयी पनवृष्टि तहाँ तिहिं वार ॥१२॥ गये तब काननमाहिं दयाल। धरयो तुम योग सबहिं अघटाल ॥ तबैं वह धूम सुकेत अयान। भयो कमठाचरको सुर आन ॥१३॥ करै नभ गौन लखे तुम धीर। जु पूरब वैर विचार गहीर ॥ कियो उपसर्ग भयानक घोर। चली बहु तीक्ष्ण पवन झकोर ॥१४॥ रह्यो दसहूँ दिशिमें तम छाय। लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय ॥ सुरुंडनके विन मुंड दिखाय। पडै जल मूसलधार अथाय ॥१५॥ तबै पदमावति-कंथ धनिंद। चले जुग आय जहां जिनचंद ॥ भग्यो तब रंक सु देखत हाल। लह्यो तब केवल ज्ञान विशाल ॥१६॥ दियो उपदेश महा हितकार। सुभव्यन बोधि समेद पधार ॥ सुवर्णभद्र जहँ कूट प्रसिद्ध। वरी शिव नारि लही वसुरिद्ध ॥१७॥ जजूं तुम चरन दुहूं कर जोर। प्रभू लखिये अब ही मम ओर ॥ कहै बखतावर रत्न बनाय। जिनेश हमें भवपार लगाय ॥१८॥ घत्ता—जय पारस देवं सुरकृत सेवं, वंदत चर्न सुनागपती। करुणाके धारी परउपगारी, शिवसुखकारी कर्महती ॥१९॥ ओंम् ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल—जो पूजै मनलाय भव्य पारस प्रभु नितही। ताके दुख सब जाय भीत व्यापै नहिं कितही ॥ सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे। अनुक्रमसों शिव लहै, रतन इमि कहै पुकारे ॥२०॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं)